सामान्य मत्स्य रोग

रोगाणु, लक्षण, कारण, कार्रवाई व उपचार

रोग व रोगाणु	लक्षण	कारण	कार्रवाई	उपचार
नासूर (Ulcer) रोगाणु: स्यूडोमोनास (Pseudomonas) व एरोमोनास (Aeromonas) बैक्टीरिया	गुलाबी-श्वेत खुले घाव, अधिकतर श्वेत किनारे वाले व कभी –कभी कवक अथवा अन्य बैक्टीरिया से संक्रमित ।	गन्दा पानी अथवा उच्च pH स्तर हल्की खंरोच में भी संक्रमण के कारण स्थिति खराब हो सकती है । आयात की गई कोई (Koi) फिश व गोल्ड (Gold) फिश में भी संक्रमण हो जाता है ।	जल को अमोनिया अथवा नाइट्राइट के लिए जांच करवायें । प्रदूषण से बचने के लिए जितना संभव हो उतने पानी की मात्रा को बदल लें ।	मछली के खुले घाव से लवण का परिग्रहण होता है । इसलिए एक्वेरियम में 1-3 ग्राम प्रति लीटर की दर से नमक डालें । अत्यधिक संक्रमण होने पर किसी चिकित्सक से परामर्श लें ।
धुंधली आंखें रोगाणु : आंख की पर्णकृमि (Fluke) eg. डिपलोस्टोमम (Diplostomum), कॉर्नीया को क्षति , बैक्टीरिया संक्रमण	आंख अथवा उसका लेंस पूरी तरह से अपारदर्शी हो जाता है व बाहरी सतह पर चिपचिपा पदार्थ (Mucus) बन जाता है ।	सबसे प्रमुख कारण है गंदा पानी । आहार में विटामीन की कमी के कारण भी यह रोग होता है	पानी की गुणवत्ता को सुधारें व मछली के आहार में विटामीन अवश्य मिलायें	सबसे असरदार उपचार पानी की गुणवत्ता को सुधारना है । यदि पर्णकृमि संक्रमण हो, तो उसे ठीक कर पाना कठिन होता है ।
ड्राप्सी रोगाणु: बैक्टीरिया वाइरस, आहार, मेटाबोलिक अथवा औस्मोरेगुलेटरी	शरीर में पानी जमा होने के कारण फुलावट चन्ने नोकीले उठे हुए । आंखे बाहर	अधिकतर गंदे पानी के कारण, प्रमुखत: अमोनिया व नाइट्राइट ।	पानी की गुणवत्ता को सुधारें व एक्वेरियम में 1-3 ग्राम प्रति लीटर की दर से	उपचार कठिन होता है । कई एन्टी-बैक्टीरिया दवाओं से उपचार संभव है ।

समस्याओं के कारण	निकली हुई ।		नमक मिलायें	
सफ़ेद दाग रोगाणु : इक्थीयोफ्थाइरीयस मल्टीफीलिस (Ichthyophthirius multifilis)	त्वचा, पंख व गलफड़ों पर नमक के दाने के आकार के सफेद दाग	तनाव संबंधी प्रायः पानी की अशुद्धियों, बदलते तापमान, अथवा गन्दगी के कारण । संवेदनशील प्रजातियां नए एक्वेरियम में रखने पर भी संक्रमित हो जाती है ।	पानी को प्रदुषण रहित रखना सुनिश्चित करें व तनाव के कारण जानकर उनका निवारण करें ।	परजीवी के उपचार के लिए दवा दें । दवा के उपयुक्त प्रभाव के लिए जल का तापमान बढ़ायें । परजीवियों द्वारा दिए गए घाव में पुनः संक्रमण हो सकता है ।
बैक्टीरियल संक्रमण रोगाणु : स्यूडोमोनास (Pseudomonas) व एरोमोनास (Aeromonas) बैक्टीरिया	त्वचा व पंखों में लालगी ; खुरदरे संक्रमित पंख, खुले घाव । अन्य फंफूंदी ग्रसित घाव	पानी में अमोनिया व नाइट्राइट के कारण । स्थानान्तरण लड़ाई अथवा गलत प्रकार से मछली पकड़ने पर लगे घाव में भी संक्रमण हो सकता है ।	पानी को शुद्ध रखें व तुरंत उपचार करें ।	एक्वेरियम में 1-3 ग्राम प्रति लीटर की दर से नमक डालें । अत्याधिक संक्रमण होने पर विशेषज्ञ की सलाह लें ।
फंफूंदी रोगाणु सेपरोलेगनिया (Saprolegnia) व एचलीया (Achlya)	त्वचा व पंखों पर रोयेंदार घाव	प्रायः नासूर अथवा परजीवी द्वारा बनाए घावों में पुनः संक्रमण के कारण । यदि पानी शुद्ध हो तो यह समस्या नहीं आती ।	पानी को शुद्ध रखें व तुरंत उपचार करें ।	फंफूंदी नाशक जैसे कि मिथाईलीन ब्लू (Methylene Blue) काफी असरदार होते हैं । परन्तु पानी पर दुष्प्रभाव डाल

				सकते हैं | यदि संक्रमण खुले घाव पर हो तो एक्वेरियम में 1-3 ग्राम प्रति लीटर की दर से नमक डालें | फ्लेक्सीबैक्टर नामक बैक्टीरिया से होने वाली बीमारी कॉटन-वूल इसी के समान लगती है परन्तु इसका उपचार पूर्णतया भिन्न होता है |
फिनरौट रोगाणु: स्यूडोमोनास एसेमोनास अथवा फ्लेक्सीबेक्टर बैक्टीरिया	कमजोर पंख हल्के गुलाबी-श्वेत किनारे व पंखों पर कुछ खून के धब्बे |	बैक्टीरिया सभी मछलियों पर होते हैं, परन्तु अशुद्ध पानी के कारण संक्रमण फैलता है | कटे हुए पंख अथवा घाव में फंफूंदी का संक्रमण अधिक फैलता है |	पानी को शुद्ध रखें | काटी गई मछलियों को अलग रखें |	रोग को फैलने से बचाने के लिए फिनरौट अथवा एन्टी-बैक्टीरियल दवा से उपचार करें | 1-3 ग्राम प्रति लीटर नमक घोलें | यह सुनिश्चित करें कि उपचार के दौरान पानी शुद्ध हो |
स्विमब्लैडर अव्यवस्था रोगाणु: बैक्टीरिया आहार में पोषक कमियां, फंसी हुई हवा,	मछली को सतह पर तैरने में कठिनाई | प्राय: सजावटी मछली गोल्ड फिश को	पानी की अशुद्धियां, अनुवांशिक कारण	पानी की गुणवत्ता बनायें रखें | सुखा आहार कम दें जो पेट में जाकर फूल जाये	आहार में बदलाव लाकर पानी की गुणवत्ता बनायें रखें | एन्टी-बैक्टीरियल दवा

भौतिक कुरूपता	संक्रमित करता है		डेफनिया पेट साफ़ करने में सहायक होता है, अतः इसे आहार में दें ।	दें । अनुवांशिक कारण ठीक नहीं किये जा सकते ।
लिम्फोसिस्टिस रोगाणु: इरीडोवाइरस	त्वचा व पंखों पर कड़े ग्रे-श्वेत रंग के धब्बे । यह धब्बे आकार में बढ़े हुए कोशिकाएं होती हैं ।	तनाव, अशुद्ध पानी ।	इससे प्रायः मछली की मृत्यु नहीं होती परन्तु यदि पुनः संक्रमण हो तो मछली को अलग कर लें ।	इस रोग हेतू कोई उपचार नहीं है । कुछ विशेषज्ञ घाव को काटकर अलग करने का परामर्श देते हैं ।

मछली को सामान्य रोगों से बचाने हेतू नियमित (माह में एक बार) गुम्मा नमक (Rock Salt) (5 ग्राम प्रति लीटर) के घोल में लगभग 30 सैकंड तक डुबोयें/स्नान कराएं ।